६. बंटी

– मन्नू भंडारी

बंटी का विद्‌यालय क्या खुला, उसका बचपन लौट आया । लंबी छुट्‌टियों के बाद पहले दिन विद्‌यालय जाना कभी अच्छा नहीं लगता पर आज लग रहा है । अच्छा ही नहीं खूब अच्छा लग रहा है । सवेरे उठा तो केवल हवा में ही ताजगी नहीं थी, उसका अपना मन न जाने कैसी ताजगी से भरा-भरा थिरक रहा था ।

''मम्मी, मेरे मोजे कहाँ हैं ... लो दूध लाकर रख दिया । पहले कपड़े तो पहन लूँ, देर नहीं हो जाएगी ... बैग तो ले जाना ही है, किताबें जो मिलेंगी, के शोर से तीनों कमरे गूँज रहे हैं ।

बहुत दिनों से जो बच्चा घर से गायब था जैसे आज अचानक लौट आया हो । जल्दी-जल्दी तैयार होकर उसने बस्ता उठाया । बस्ता भी क्या, एक कॉपी-पेंसिल डाल ली । कौन आज पढ़ाई होनी है । बस के लिए सड़क पार करके वह कॉलेज के फाटक पर खड़ा हो गया । मम्मी उसे घर के फाटक तक छोड़कर वापस लौट रही हैं । बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़कर मम्मी अंदर गुम हो गईं तो सामने केवल घर रह गया । छोटा-सा बंगलानुमा घर जो उसका अपना घर है, जो उसे बहुत अच्छा लगता है ।

एकाएक ही खयाल आया, इसी घर में पता नहीं क्या कुछ घट गया है इन छुट्‌टियों में । उसने जल्दी से नजरें हटा लीं । तभी दूर से धूल उड़ाती हुई बस आती दिखाई दी । बंटी ने खट् से बस्ता उठाया और बस के रुकते ही लपककर उसमें चढ़ गया । दौड़ता हुआ टीटू चला आ रहा है, लेटलतीफ ।

'बंटी, इधर आ जा, यहाँ जगह है ।' जगह बहुत सारी थी पर कैलाश ने एक ओर सरककर उसके लिए खास जगह बनाई ।
बंटी यार, इधर ! इधर आकर बैठ । विभु उसे अपनी ओर खींच रहा है । बंटी अपने को बड़ा महत्वपूर्ण महसूस करने लगा और बैठते ही उसका अपना चेहरा बच्चों के परिचित, उत्फुल्ल चेहरों के बीच मिल गया ।

बस चली तो सबके बीच हँसते-बतियाते उसे ऐसा लगा जैसे सारे दिन खूब सारी पढ़ाई करके घर की ओर लौट रहा है । तभी खयाल आया- धत वह तो स्कूल जा रहा है ।

परिचय

जन्म : १९३१, मंदसौर (म.प्र.)
परिचय : मन्नू भंडारी जी का स्थान स्वातंत्र्योत्तर काल की महिला कथाकारों में अग्रणी है । आपने आधुनिक नारी जीवन की समस्याओं का सूक्ष्म तथा मार्मिक वर्णन किया है । व्यंग्य शैली में सहज-सरल अभिव्यक्ति आपके लेखन की विशेषता है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मैं हार गई' (कहानी संग्रह), 'आपका बंटी', 'महाभोज' (उपन्यास), 'एक प्लेट सैलाब', 'त्रिशंकु' (नाटक) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत गद्‌यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से लिया गया है । इसमें बंटी, इस बच्चे के विद्‌यालय के पहले दिन का उत्साह तथा आनंद व्यक्त किया है । यह पूरा वर्णन प्रत्येक विद्‌यार्थी के भावविश्व से मिलता-जुलता है ।

मौलिक सृजन

'पुस्तकों में अद्‌भुत दुनिया देखी जाती है' इस पर अपने विचार लिखो ।

बस, जैसे भाजी मार्केट । बातें....बातें । कौन कहाँ-कहाँ गया ? किसने क्या-क्या देखा ? छुट्टियों में कैसे-कैसे मौज उड़ाई । अनंत विषय थे और सबके पास कहने के लिए कुछ-न-कुछ था ।

बंटी क्या कहे ? वह खिड़की से बाहर देख रहा है । हुँह ! कुछ नहीं कहना उसे ।

मेरे मामा आए थे एक साइकिल दिला गए थे ।

हम तो दिल्ली में कुतुबमीनार देखकर आए ।

क्यों रे बंटी, तू कहीं नहीं गया इस बार ? पिछली बार तो मसूरी घूमकर आया था ।

''गया था ?''

''नहीं'' बंटी ने धीरे से कहा ।

''सारी छुट्टियाँ यहीं रहा ?''

''हाँ । मम्मी ने खस के परदे लगा-लगाकर सारा घर खूब ठंडा कर रखा था, मसूरी से भी ज्यादा ।'' बस बंटी फिर बाहर देखने लगा ।

कितनी बातें हैं उसके पास भी कहने के लिए पर क्या वे सब कही जा सकती हैं ? मान लो, वह किसी को बता भी दे तो कोई समझ सकता है ? एकदम बड़ी बातें । यह तो वह है जो एकाएक समझदार बन गया । ये विभु, कैलाश, दीपक, टॉमी... कोई समझ तो लें पर अपनी इस समझदारी पर उसका अपना ही मन जाने कैसा भारी-भारी हो रहा है ।

बस जब विद्यालय के फाटक पर आकर रुकी तो एक-दूसरे को ठेलते - ढकेलते बच्चे नीचे उतरने लगे । नीचे खड़े सर बोले - '' धीरे बच्चो, धीरे ! तुम तो बिलकुल पिंजरे में से छूटे जानवरों की तरह ...'' तो बंटी को लगा जैसे वह सचमुच ही किसी पिंजरे में से निकलकर आया है । बहुत दिनों बाद सामने विद्यालय का लंबा-चौड़ा मैदान दिखाई दिया तो हिरन की तरह चौकड़ी भरता हुआ दौड़ गया । गर्मी का सूखा - रेतीला मैदान इस समय हरी-हरी घास के कारण बड़ा नरम और मुलायम हो रहा है, जैसे एकदम नया हो गया हो ।

नई कक्षा, नई किताबें, नई कापियाँ, नये - नये सर... इतने सारे नयों के बीच बंटी जैसे कहीं से नया हो आया है । नया और प्रसन्न । हर किसी के पास दोस्तों को दिखाने के लिए नई - नई चीजें हैं । जैसे ही घंटा बजता और नये सर आते, उनके बीच में खटाखट चीजें निकल आतीं । प्लास्टिक के पजल्स, तस्वीरोंवाली डायरी, तीन रंगों की डॉट पेंसिल ... 'बस, एक मिनट के लिए शोर यहाँ से वहाँ तक तैर जाता ।

संभाषणीय

गरमी की छुट्टियों में किए कार्यों के संबंध में अपने सहपाठियों से चर्चा करो ।

लेखनीय

विद्‌यालय से घर लौटने के बाद दरवाजे पर लगा ताला देखकर अपने मन में आए विचार लिखो ।

पठनीय

समाचारपत्र में छपे विभिन्न जयंती समारोह के समाचार पढ़ो ।

‘‘मेरे पास बहुत बड़ावाला मैकेनो है । इतना बड़ा कि विद्‌यालय तो आ ही नहीं सकता । कोलकाता से आया है । कोई भी घर आए तो वह दिखा सकता है ।’’

एक क्षण को उँगलियाँ एक - दूसरी पर चढ़ीं और फिर झट से हट भी गईं । हुँह, कुछ नहीं होता । कोई उसके घर आएगा तो वह ज़रूर बताएगा मैकेनो । सब लोग अपनी चीजों को दिखा-दिखाकर कैसा इतरा रहे हैं, शान लगा रहे हैं और वह बात भी नहीं करे ।

विभु, तू शाम को आ जा अपने भैया के साथ । बहुत चीजें बनती हैं उसकी...पुल, सिगनल, पवनचक्की, क्रेन...’’

खयाल आया, उसने भी तो अभी तक सब कुछ बनाकर नहीं देखा । विभु आ जाए तो फिर दोनों मिलकर बनाएँगे । विभु नहीं भी आया तो वह खुद बनाएगा । यह भी कोई बात हुई भला !

स्कूल की बातों से भरा-भरा बंटी घर लौटा । खाली बस्ता भी नई-नई किताबों से भर गया था ।

मम्मी अभी कॉलेज में हैं । उसके आने के एक घंटे बाद घर आती हैं । बंटी दौड़कर फूफी को ही पकड़ लाया ।

‘‘अच्छा, एक बार इस बस्ते को तो उठाकर देखो ।’’

‘‘क्या है बस्ते में ?’’ बंटी के चेहरे पर संतोष और गर्व भरी मुस्कान फैल गई । ‘‘चलो हटो ।’’ और फिर खट् से बस्ता उठाकर, सैनिक की मुद्रा में चार-छह कदम चला और फिर बोला, ‘‘रोज ले जाना पड़ेगा । अभी तो ये बाहर और पड़ी हैं । चौथी क्लास की पढ़ाई क्या यों ही हो जाती है ? बहुत किताबें पढ़नी पड़ती हैं ।’’ फिर एक-एक किताब निकालकर दिखाने लगा ।

‘‘यह इतिहास की है । कब कौन-सा राजा हुआ, किसने कितनी लड़ाइयाँ लड़ीं सब पढ़ना पड़ेगा । समझी ! यह भूगोल है... यह सामान्य विज्ञान... यह एटलस है । पहचान सकती हैं ? लो, अपने देश को भी नहीं पहचानती ! देखो, यह सारी दुनिया का नक्शा है ।’’ कहकर बंटी हँसने लगा ।

बंटी को यों हँसते देख, फूफी एकटक उसका चेहरा देखने लगीं, कुछ इस भाव से जैसे बहुत दिनों बाद बंटी को देख रही हों । फिर गद्‌गद्‌ स्वर में बोलीं, ‘‘हाँ भैया, मेरी तो रसोई ही मेरा देश है । और देश-दूश मैं नहीं जानती । हुए होंगे राजा-महाराजा, मेरा तो बंटी भैया ही राजा है ।’’

‘‘अब इस बूढ़े तोते के दिमाग में कुछ नहीं घुसता भैया, तुम काहे

मगज मार रहे हो । चलो हाथ-मुँह धोकर कुछ खा-पी लो । मुँह तो देखो, भूख और गर्मी के मारे चिड़िया जैसा निकल आया है ।''

बंटी खाता जा रहा है और उसका उपदेश भी चालू है । ''तुम कहती थीं न फूफी कि रात-दिन भगवान करते हैं । पानी भगवान बरसाता है । सब झूठ । सामान्य विज्ञान की किताब में सारी सही बात लिखी हुई है । अभी पढ़ी नहीं है । जब पढ़ लूँगा तो सब तुम्हें बताऊँगा ।''

''तो हम कौन इसकूल में पढ़े बंटी भैया ! बस, अब तुमसे पढ़ेंगे । इंगरेजी भी पढ़ाओगे हमें...''

बंटी फिर खीं.. खीं.. करके हँस पड़ा । फूफी और अंग्रेजी और फिर फूफी जितनी भी बातें करती रही, बंटी हँसता रहा.. खिलखिलाकर फूफी उसे देखती रही गदगद होकर ।

जब मम्मी आई तो बंटी ने वे ही सारी बातें दोहराई । उतने ही उत्साह और जोश के साथ । विद्यालय में क्या-क्या हुआ ?

विभु ने दिल्ली जाकर क्या-क्या देखा ? मम्मी उसे कब ले जाकर दिखाएगी और फिर उसी झोंक में कह गया, ''मैंने सबको अपने मैकेनो के बारे में बता दिया । यदि शाम को विभु आया तो उसे दिखाऊँगा भी...'' फिर एक क्षण को मम्मी की ओर देखा, मम्मी वैसे ही मंद-मंद मुस्करा रही है । कुछ भी नहीं, वह बेकार डरता रहा इतने दिनों । खेलने से क्या होता है भला !

''मम्मी, अब अपना काम सुन लो ।'' आवाज में आदेश भरा हुआ है । ''आज ही सारी किताबों और कापियों पर कवर चढ़ जाना चाहिए, ब्राउनवाला । नहीं तो कल सजा मिलेगी, हाँ । तुम सब काम छोड़कर पहले मेरे कवर चढ़ा देना । फिर सफेद लेबल काटकर चिपकाने होंगे । उनपर नाम और कक्षा लिखना होगा । खूब सुंदरवाली राइटिंग में जमा-जमाकर लिखना, समझी ।'' फिर उसी उत्साह और जोश में भरा-भरा वह टीटू के यहाँ दौड़ गया ।

— ० —

श्रवणीय

महान विभूतियों के माताओं संबंधी विचार सुनो ।

शब्द वाटिका

उत्फुल्ल = प्रसन्न
बतियाना = बातें करना
पवन चक्की = हवा के जोर से चलने वाली चक्की

मुहावरे

गदगद होना = खुश होना
जोश में आना = उत्साहित होना
मन भारी होना = दुखी होना

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) संजाल पूर्ण करो :

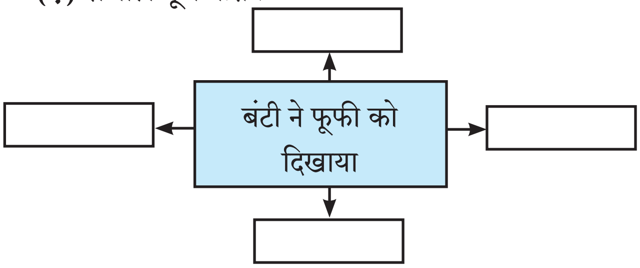

(२) विधान पढ़कर सही/गलत लिखो, गलत विधानों को सही करके लिखो :

१. बंटी की मम्मी विद्‌यालय में पढ़ाती है ।
२. दौड़ता हुआ टीटू लेट लतीफ था ।
३. बंटी की चाची ने बस्ता उठाया ।
४. खाली बस्ता भी नई–नई किताबों से भर गया था ।

(३) तालिका पूर्ण करो :

१.	बंटी के मित्र	----------,----------
२.	पाठ में प्रयुक्त रिश्ते	----------,----------
३.	मैकनो से बनने वाली चीजों के नाम	----------,----------
४.	पाठ में प्रयुक्त शालेय विषयों के नाम	----------,----------

(४) कारण लिखो :

१. लंच टाइम में बच्चे बहुत हँस पड़े ......
२. बंटी छुट्‌टियों में कहीं नहीं गया ......

(५) उत्तर लिखो :

१. सामान्य विज्ञान की पुस्तक से बंटी कौन–कौन सी बातें पढ़ने वाला था ?
२. बंटी ने अपनी मम्मी से क्या–क्या करने के लिए कहा ?

सदैव ध्यान में रखो

शिक्षा सर्वांगीण विकास का मार्ग है ।

भाषा बिंदु

१. पाठ में प्रयुक्त शब्दयुग्म चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।
२. पाठों में आईं प्रेरणार्थक क्रियाएँ लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन

'विद्‌यालय की आत्मकथा' विषय पर निबंध लिखो ।

MHTSQD

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

हिंदी साहित्य में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त किन्हीं दो साहित्यकारों की सचित्र जानकारी प्राप्त करो ।